बच्चों का चरित्र-निर्माण

□ श्रीमती कुमुद गुप्ता
प्राध्यापिका, हिन्दी ज्ञान मन्दिर महाविद्यालय, नीमच (म० प्र०)

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत के सामने जो अनेक समस्याएँ उदित हुईं, उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या बच्चों के चरित्र-निर्माण की है। क्योंकि वर्तमान समय में सर्वत्र अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार, हिंसा का बोलबाला दिखाई देता है। इसका मुख्य कारण है, नागरिकों में मानवीय गुणों का अभाव। इन मानवीय गुणों के अभाव में किसी भी राष्ट्र या समाज की प्रगति सम्भव नहीं हो सकती। राष्ट्र और समाज के सर्वांगीण विकास हेतु बच्चों के चरित्र निर्माण की दिशा में चिन्तन करना आवश्यक है। बच्चों का चरित्र ही राष्ट्र की प्रगति की आधारशिला है।

चरित्र क्या है ?

चरित्र, संसार की सबसे बड़ी कर्म-प्रेरणा शक्ति है। इसी के द्वारा मानव-स्वभाव एवं राष्ट्र का सर्वोत्तम स्वरूप प्रकट होता है। पर उत्तम प्रकार का चरित्र बिना प्रयत्न किये प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसके लिये वर्षों की सतर्कता, आत्मानुशासन, आत्मनियन्त्रण व सावधानीपूर्वक आत्मनिरीक्षण करते रहने की आवश्यकता होती है। प्रेरणा शक्ति के द्वारा शिशुओं या बालकों में उन शक्तियों का विकास किया जा सकता है जिन पर उनका स्वरूप, सफलता और सुख निर्भर है।

अच्छी आदतों का समूह ही चरित्र है। सच्चाई, न्याय, अहिंसा, उदारता, क्षमाशीलता, समय की पाबन्दी, विश्वास, परोपकार, आज्ञा-पालन मानवीय गुणों के आधारस्तम्भ हैं। या यों कहें कि चरित्र-निर्माण की दिशा में प्रथम प्रयास हैं। जिस समाज या राष्ट्र के व्यक्तियों में ये गुण जितनी अधिक मात्रा में होते हैं वह राष्ट्र उतना ही अधिक प्रगतिशील राष्ट्र माना जाता है, क्योंकि देश की प्रगति उस देश के नागरिकों पर निर्भर है। राष्ट्र व समाज के सर्वांगीण विकास हेतु बच्चों के चरित्र-निर्माण की दिशा में चिन्तन करना आवश्यक है।

बच्चों के बारे में बाल-विशेषज्ञों का मत

बच्चों का मस्तिष्क और उनका स्वभाव कच्चे घड़े के समान होता है। उस पर जो भी चिन्ह पड़ेंगे वे अमिट हो जायेंगे। वैसे भी बालक की प्रवृत्ति सीखने और अनुकरण करने की होती है उसमें अच्छे या बुरे का ज्ञान नहीं होता। बालकों के चरित्र-निर्माण का उत्तरदायित्व उनके अभिभावकों और अध्यापकों पर निर्भर है।

चरित्र मानव-स्वभाव का सर्वोत्तम विकासशील स्वरूप है। यदि मानव-जीवन के किसी भी क्षेत्र पर दृष्टि डालें, तो हम देखेंगे कि प्रतिभाशील लोग अपने चरित्र के आधार पर ही समाज में प्रतिष्ठित पद प्राप्त कर लेते हैं। क्योंकि चरित्र ही मनुष्य के सहज और स्वाभाविक गुणों को निखारता है। मनुष्य की प्रतिदिन की छोटी-छोटी बातें ही उसके चरित्र का निर्माण करती हैं और वे ही मानव की प्रगति की आधारशिला बन जाती हैं। किन्तु आज की भौतिक सभ्यता चरित्र की पवित्रता और उत्तमता पर अधिक बल नहीं देती है। जार्ज हरबर्ट का कथन है "थोड़ी सी सच्चरित्रता हजारों ग्रन्थों के अध्ययन से बढ़कर है।" कहने का तात्पर्य है कि विद्या हमेशा सदाचार की सहायक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होनी चाहिए। चरित्र-निर्माण के लिये धन की आवश्यकता नहीं। मनुष्य के पास यदि परिश्रम और ईमानदारी हो तो उसके सहारे ही वह मानवों की सर्वोच्च श्रेणी में स्थान प्राप्त कर सकता है। जो उस सम्पत्ति के स्वामी हैं वे भले ही सांसारिक पदार्थों की दृष्टि से धनी न बन सकें; पर वे सम्मान और प्रसिद्धि की दृष्टि से महान् बनकर दूसरों के लिये प्रेरणा के स्रोत बन सकते हैं।

चरित्र का निर्माण विविध सूक्ष्म परिस्थितियों में होता है। प्रत्येक चेष्टा, प्रत्येक विचार, प्रत्येक अनुभूति हमारे चरित्र-निर्माण में सहायक है, क्योंकि हमारी आदतों का हमारे भावी जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

बालक और चरित्र

बालक सचमुच किसी देश के प्राण और रक्त होते हैं। वे ही देश की रीढ़ की हड्डी माने जाते हैं। या यों कहें कि वे राष्ट्र की नींव हैं, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि बालक के चरित्र से ही राष्ट्र का चरित्र बनता है। इसी कारण बालक के चरित्र-निर्माण की समस्या और भी विकट रूप धारण किये हुए है। घर का और पाठशाला का वातावरण इतना दूषित हो गया है कि बालक को यहाँ से उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पा रहा है।

बालक के चरित्र-निर्माण की आवश्यकता क्यों ?

बालक के चरित्र-निर्माण की समस्या उसकी चंचल मनोवृत्ति व स्वभाव से ही उत्पन्न होती है। प्रत्येक बच्चा अपना विकास स्वयं करता है। बच्चे के विकास और चरित्र-निर्माण में हम क्या योगदान दें, यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न है।

बच्चे का चरित्र-निर्माण एक साथ नहीं होता है। वह विभिन्न सोपानों से होकर निर्मित होता है। उसके लिए उचित वातावरण तैयार करना पड़ता है क्योंकि बच्चे की भावी शिक्षा, शारीरिक गठन, आचार, व्यवहार आदि वातावरण पर निर्भर हैं। वातावरण जीवन की गति को मोड़ देता है। अतः उचित वातावरण निर्मित करना अभिभावक, शिक्षक, संस्था और देश के लिये परम आवश्यक है।

चरित्र-निर्माण के संभावित उपाय

(१) **घर**—चरित्र-निर्माण की सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रथम पाठशाला घर है। घर में प्रत्येक बालक सर्वोत्तम चारित्रिक शिक्षण प्राप्त करता है। यदि घर का वातावरण ठीक हो तो घर ही सबसे बड़ा प्रशिक्षण देने वाला विद्यालय बन जाता है। व्यवहार ही मनुष्य की रचना करता है, किन्तु जिस प्रकार का साँचा होता है, उसमें से निर्मित होने वाली वस्तु का स्वरूप भी उसी प्रकार का होता है, अतः घर ही मनुष्य की रचना करता है। घरेलू प्रशिक्षण से व्यवहार, मन और चरित्र सभी प्रभावित होते हैं। घर में ही हृदय खुलता है, आदतें पड़ती हैं, बुद्धि जागृत होती है और साँचे में चरित्र ढलता है। घर ही वह स्रोत है जहाँ से सिद्धान्त और उपदेश प्रकट होते हैं, जो समाज का निर्माण करते हैं। बच्चों के मन में जो छोटे-छोटे संस्कार या विचार-बीज बो दिये जाते हैं वे ही आगे चलकर तरुवर के रूप में प्रकट होते हैं। प्राथमिक विद्यालयों से ही राष्ट्र अंकुरित हैं। बच्चा जब संसार में आता है, असहाय होता है, उसे अपने पोषण तथा संस्कार के लिए घर के लोगों पर पूर्णतः निर्भर या आश्रित रहना पड़ता है। जन्म लेते ही पहले श्वास के साथ बालक का प्रशिक्षण प्रारम्भ हो जाता है।

कहने का तात्पर्य है कि बचपन की शिक्षा-दीक्षा से अनुमान लगाया जा सकता है कि गुणों या दोषों के बीजाणु बाल्यकाल में मनुष्य के शारीरिक-मानसिक क्षेत्र में पनप जाते हैं। लार्ड प्रागम ने कहा है कि १८ और ३० महीने की अवस्था के बीच में बालक बहुत कुछ शिक्षण प्राप्त कर लेता है। इसी अवस्था में वह पदार्थ जगत् के विषय में, अपनी शक्तियों के बारे में, और दूसरों के विषय में जितना कुछ सीख जाता है, उतना आयु के सम्पूर्ण शेष भाग में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भी नहीं सीख पाता। बाल्यावस्था दर्पण के समान है। प्रथम हर्ष, प्रथम खेद, प्रथम सफलता, प्रथम असफलता आदि से ही जीवन के भविष्य का स्वरूप चित्रित होता है।

बालक जो कुछ देखता है, उसका अनुकरण किये बिना नहीं रहता। व्यवहार, बर्ताव, चेष्टा, इंगित, गीत और भाषण का ढंग बालक अपने से बड़ों से ग्रहण करता है।

यदि देखा जाय तो बालक की आदर्श मूर्ति उसकी माता और पिता होते हैं। माता की भूमिका उसके चरित्र-निर्माण में महत्त्वपूर्ण होती है। जार्ज हरबर्ट ने कहा है कि अच्छी माता सौ अध्यापकों से बढ़कर होती है। यह शिक्षा मौन होती है क्योंकि माता की क्रियाओं का प्रभाव बालक के हृदय पर पड़ता है। घर का चारित्रिक वातावरण माता पर आश्रित है। सुशीलता, दयालुता, चातुर्य, कार्यकुशलता, प्रसन्नता, सन्तोष आदि जो चरित्र के आवश्यक गुण हैं, माता से ही प्राप्त होते हैं। धैर्य व आत्म-संयम के पाठ की व्यावहारिक शिक्षा घर पर ही मिलती है।

(२) **शिक्षा**—वास्तविक स्थिति में शिक्षा का ध्येय चरित्र-निर्माण है। क्योंकि शिक्षा मनुष्य को जीवन की परिस्थितियों से जूझने के लिए तैयार करती है। शिक्षा मानवता के लिए आवश्यक बिन्दु है। शिक्षा केवल मनुष्य में ज्ञान-दान नहीं करती है वह संस्कार और सुरुचि को भी विकसित करती है। महात्मा गांधी ने कहा भी है कि सदाचार और निर्मल जीवन ही सच्ची शिक्षा का आधार है।

(६) **अच्छी संगति**—जार्ज हर्बर्ट ने कहा था—अच्छे लोगों की संगति करो, तुम भी उन जैसे बन जाओगे। चरित्र-निर्माण में घर के बाद पाठशाला का स्थान है। वहाँ मित्रों और साथियों की संगति पाने का अवसर बालक को मिलता है। जैसा हम भोजन करते हैं, वैसा ही प्रभाव शरीर पर पड़ता है, उसी प्रकार जैसी हमें संगति व शिक्षा मिलेगी वैसी हमारी मानस-आत्मा बनेगी। मित्रों के आचार, विचार, इंगित, चेष्टा, भाषण आदि चरित्र-निर्माण में सहायक बनते हैं। दृष्टान्त या उदाहरण मानव-जाति की पाठशाला है।

लॉक ने कहा है, चरित्र-अनुशासन की शिक्षा का सर्वोत्तम लक्ष्य यह होना चाहिए कि वह मनुष्य के मन को ऐसी शक्ति दे, जिससे मनुष्य आदत के शासन पर विजय पा सके। उत्साही और बुद्धिमान् व्यक्ति की संगति का मनुष्य के चरित्र-निर्माण में महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। एक उत्तम चरित्र वाला व्यक्ति, चाहे वह किसी भी कारखाने में काम करता हो, अपने साथियों में उदारता व सत्यता के भाव भरने का प्रयत्न कर सकता है। उत्तम चरित्र सुगन्ध की तरह है, लोग उसका अनुकरण करते हैं। चारित्रिक शक्ति का सबसे पहला हथियार है सहानुभूति। अच्छा जीवन-चरित्र एक अच्छा जीवन-साथी है।

(४) **कर्म द्वारा चरित्र-निर्माण**—संसार कर्म (क्रियाशीलता) प्रधान है। अतः चरित्र-निर्माण में कर्म का महत्त्वपूर्ण योगदान है। कर्म के द्वारा मनुष्य को अनुशासन, आत्म-निग्रह, एकाग्रता, प्रयोग, व्यावहारिकता, धैर्य और कार्य-निपुणता की शिक्षा मिलती है। सभ्यता का विकास कर्म पर आधारित है। आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। कर्म जीवन को अनुशासित करता है। कर्म मनुष्य का वास्तविक शिक्षक है। पेशे, धन्धे, पद, व्यवहार, व्यापार, व्यवसाय में प्रशिक्षण प्राप्त करने से मनुष्य की क्षमतायें विकसित होती हैं।

(५) **चारित्रिक साहस**—साहस द्वारा ही किसी मनुष्य का चरित्र महान् बनता है। साहस के द्वारा ही सत्य की खोज, सत्य-भाषण, लालसाओं को रोकने की शक्ति आदि का विकास होता है। सुकरात को उच्च विचारों के लिए विष का प्याला पीना पड़ा।

(६) **आत्म-संयम**—आत्म-संयम सब गुणों की नींव है। जब मनुष्य अपनी इच्छा व लालसा का दास बन जाता है तो वह अपनी चारित्रिक स्वतन्त्रता को खो बैठता है और जीवन की धारा असहाय होकर बहने लगती है। अनुशासन जितना पूर्ण होगा, चरित्र उतना ही ऊँचा होगा। चरित्र अनुशासन का सर्वोत्तम द्वार है। एक योग्य अध्यापक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का कथन है—'जीवन के अनुशासन सम्बन्धी नियम उसी प्रकार पढ़ाये तथा सिखाये जा सकते हैं, जैसे कि कोई भाषा।' व्यापार या राजनीति में इतनी सफलता प्रतिभा से नहीं मिलती, जितनी शील स्वभाव के कारण मिलती है। नियन्त्रण ही शक्ति है। वैसे भी हम देखते हैं, भाप को जब नियन्त्रित किया जाता है, तब वह कितनी बड़ी शक्ति बन जाती है। इसी प्रकार चरित्र की दृढ़ता जब अनुशासनबद्ध हो जाती है, तब वह महान् शक्ति बन जाती है। अतः बालक में आत्म-संयम जैसे गुणों द्वारा चरित्र का निर्माण किया जा सकता है।

(७) **कर्तव्यपालन की भावना**—कर्तव्यपालन भी चरित्र-निर्माण का एक माध्यम बन सकता है। कर्त्तव्य एक ऋण है, जिसे प्रत्येक मनुष्य को चुकाना पड़ता है। जो मनुष्य चाहता है कि वह चारित्रिक दृष्टि से दिवालिया करार न कर दिया जाय, तो उसे अपने कर्त्तव्य का पालन अवश्य करना चाहिए। कर्त्तव्य के लिये समर्पित होने की भावना ही चरित्र का मुकुट है। कर्त्तव्य की प्रेरणा से प्रेरित मनुष्य कितना ही दुर्बल क्यों न हो, उसे अपने आत्मबल अर्थात् मनोबल को बुलंद रखना चाहिए। यदि मनोबल टूट गया तो फिर कर्त्तव्य का विवेक भी लुप्त हो जायेगा। अतः इस प्रकार का वातावरण निर्मित किया जावे, साथ ही ऐसी व्यावहारिक व नैतिक शिक्षा की व्यवस्था की जाय कि जिससे बच्चे का मनोबल दृढ़ हो तथा वह स्वतः ही अपने चरित्र का निर्माण करता चले।

□

उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दविया जिणे।
मायं च अज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे॥

—दशवैकालिक ८।९

क्रोध को क्षमा से, मान को मृदुता से, माया (कपट) को सरलता से और लोभ को सन्तोष से जीतना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org